नृसिंह चतुर्दशी



श्री लक्ष्मीनरसिंहाय नमः

Essence Of Astrology

- By Lokesh Agrawal

संस्करण : १.०
वैशाख शुक्ल षष्ठी २०८० विक्रम सम्वत

वैशाखशुक्ल चतुर्दशी : नृसिंह जयन्ती

प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या

ॐ उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ।।

हे क्रुद्ध एवं शूरवीर महाविष्णु, तुम्हारी ज्वाला एवं ताप चतुर्दिक फैली हुई है। हे नरसिंहदेव, तुम्हारा चेहरा सर्वव्यापी है, तुम मृत्यु के भी यम हो और मैं तुम्हारे समक्ष आत्मसमर्पण करता हूँ ।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को श्रीभगवान नृसिंह का आविर्भाव हुआ था अतः यह दिन नृसिंह चतुर्दशी के नाम से विख्यात है और इस दिन नृसिंह जयन्ती व्रत किया जाता है। सत्ययुग के चौथे चरण में नृसिंह अवतार होता है। नृसिंह अवतार भगवान विष्णु के विभूत्यावतार हैं (बारह कला से लेकर चौदह-पन्द्रह कला का अवतार विभूत्यावतार होता है)

श्रीहरिभक्तिविलास के चतुर्दश विलास में आया है

वैशाखस्य चतुर्दश्यां शुक्लायां श्रीनृकेशरी।
जात स्तदस्यां तत् पूजोत्सवं कुर्वीत सव्रतं।।

वैशाख मास की चतुर्दशी तिथि में श्री नृसिंहदेव का आविर्भाव. हुआ था, इसलिए इस तिथि में उपवास व्रत के साथ पूजोत्सव करें।

आगम ग्रंथों में आया है

वैशाखे शुक्लपक्षे च चतुर्दश्यां महातिथौ। सायं प्रह्लादधिक्कारमसहिष्णुः परो हरिः।।
सद्यः कटकटाशब्दविस्मापितसभाजनः। लीलया स्तम्भगर्भान्तादुद्भूतः शब्दभीषणः।।
नृहरेरवताराक्तां यत्नतः समुपोषयेत्। महापुण्यतमायाञ्च सायं विष्णुं प्रपूजयेत्।।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी महातिथि में भक्त प्रह्लाद के क्लेश से उद्विग्न होकर सायंकाल में सभाजन को विस्मापित करके स्तम्भ से परमहरि भीषण शब्द के साथ आविर्भूत हुए थे इसलिए महापुण्यतमा इस तिथि की आराधना करें और सायंकाल में श्रीविष्णु का पूजन करें।

निम्न शास्त्र कथनों में भी वैशाख शुक्ल चतुर्दशी को श्रीहरि के लिए व्रत और पूजा का निर्देश है

वैशाखशुक्लपक्षस्य चतुर्द्दश्यां समाचरेत् ।
मज्जन्मसम्भवं पुण्यं व्रतं पापप्रणाशनम् ।। (नरसिंहपुराण)

वैशाखस्य चतुर्दश्यां शनेर्दिने स्वात्यृक्षके।
आद्यावतारो नृहरेः सन्ध्यायां तं प्रपूजयेत्।। (लक्ष्मीनारायणसंहिता)

निर्णयसिन्धु ने टोटरानन्द में स्कंदपुराण का मत बताया है

वैशाखस्य चतुर्द्दश्यां सोमवारेऽनिलर्क्षके।
अवतारो नृसिंहस्य प्रदोषसमये द्विजाः।।

वैशाख मास के शुक्लपक्ष की चतुर्दशी तिथि में सोमवार, अनिल (कृत्तिका) नक्षत्र तथा प्रदोष समय में नृसिंह का अवतार हुआ था।

स्कन्दपुराण वैष्णवखण्ड का कथन है

वैशाखस्य चतुर्दश्यां सौरिवारेऽनिलर्क्षके ।
आद्यावतारः सिंहस्य प्रदोषसमये द्विजाः ।।
तस्यां संपूज्य विधिवन्नरसिंहं समाहितः ।
जन्मकोटिसहस्त्रैस्तु पापराशिः सुसंचितः ।
दह्यते तत्क्षणादेव तूलराशिरिवाग्निना ।।

वैशाख की चतुर्दशी को शनिवार के दिन, स्वाति नक्षत्र में प्रदोष के समय भगवान नृसिंह का आदि अवतार हुआ है। उस तिथि को विधिपूर्वक नृसिंह की पूजा करके मनुष्य अपने करोड़ों जन्मों की सञ्चित पाप राशि को तत्काल भस्म कर देता है।

चूंकि भगवान् नृसिंह का आविर्भाव प्रदोषकाल में हुआ था अतः इस व्रत में प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशी लेनी चाहिए। अगर दो दिन प्रदोषव्यापिनी हो तो परा का ग्रहण होता है। परन्तु वैष्णव के लिए त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी का व्रत वर्जित है अतः व्रत निर्धारण में त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी का त्याग किया जाता है। त्रयोदशी से विद्धा शुक्ल चतुर्दशी धन संतान का नाश करती है।

नरसिंहपुराण का कथन है

स्वातीनक्षत्रयोगे तु शनिवारे हि मद्व्रतम्।
सिद्धयोगस्य योगे च लभ्यते दैवयोगतः।।
सर्व्वैरेतैस्तु संयुक्तैर्हत्याकोटिविनाशनम्।
केवलञ्च प्रकर्त्तव्यं मद्दिनं फलकाङ्क्षिभिः।
वैष्णवैर्न तु कर्त्तव्या स्मरविद्धा चतुर्द्दशी।।

दैवयोग से सौभाग्यवश यदि स्वाती नक्षत्र शनिवार में चतुर्दशी में सिद्धि योग और वणिज करण में व्रत हो तो यह व्रत समस्त पापों का नाशक है, यह व्रत सब लोग करें। फलाभिलाषी व्यक्ति उक्त योग न होने पर भी इस दिन व्रत करे, किन्तु वैष्णव गण भी स्मर त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी न करे।

निर्णयसिन्धु में यह कथन इस प्रकार मिलता है जिसको हेमाद्रि और नरसिंह पुराण से लिया है

स्वातीनक्षत्रसंयोगे शनिवारे महद्व्रतम्।
सिद्धियोगस्य संयोगे वणिजे करणे तथा।।

पुंसां सौभाग्ययोगेन लभ्यते दैवयोगतः।
सर्वैरेतैस्तु संयुक्तं हत्याकोटिविनाशम्।।

स्वाति नक्षत्र मंगलवार युक्त होने पर भी वैष्णवों के लिए त्रयोदशी विद्धा व्रत का निषेध है

प्रिया चतुर्दशी भौमे कर्तव्या किल्वषापहा।
काम विद्धा न कर्तव्या स्वातीभौम युता यदि।।

पापनाशिनी चतुर्दशी यदि मंगलवार में हो तो अवश्य इस दिन व्रत करे, किन्तु स्वाति भौमयुक्ता होने पर भी त्रयोदशी विद्धा चतुर्दशी में व्रत करना उचित नहीं है।

परन्तु इन कथनों का उपयोग दो प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशी में परा का ग्रहण करने हेतु है क्योंकि नरसिंह चतुर्दशी में प्रदोषव्यापिनी चतुर्दशी की ही प्रधानता है।

नित्य व्रत

वैष्णव के लिए नृसिंह चतुर्दशी एक नित्य व्रत है और इसके न करने से नरसिंहपुराण में नरकवास का प्रावधान आया है

"वर्षे वर्षे तु कर्त्तव्यं मम सन्तुष्टिकारणम् ।
महागुह्यमिदं श्रेष्ठं मानवैर्भवभीरुभिः ।।"

"विज्ञाय मद्दिनं यस्तु लङ्घयेत् स तु पापभाक् ।
एवं ज्ञात्वा प्रकर्त्तव्यं मद्दिने व्रतमुत्तमम् ।
अन्यथा नरकं याति यावच्चन्द्रदिवाकरौ ।।"

पद्मपुराण उत्तरखण्ड में स्वयं नृसिंह भगवान ने इस दिन व्रत रखने का निर्देश दिया है

प्रह्लाद वत्स भद्रं ते श्रृणुष्वैकमना व्रतम्।
वैशाखेसित पक्षे तु चतुर्दश्यां समाचरेत्।।
ममाविर्भावसंयुक्तं मम संतुष्टिकारणम्।
श्रृणु पुत्र ममोत्पत्तिं भक्तानां सुखहेतवे।।

व्रत करने का अधिकार

प्रत्येक मनुष्य का इस व्रत में अधिकार है विशेषतः श्रीभगवान के शरणागत भक्त

सर्व्वेषामेव लोकानामधिकारोऽस्ति मद्व्रते।
मद्भक्तैस्तु विशेषेण प्रणेयं मत्परायणैः।।

माहात्म्य

नरसिंहपुराण में श्रीप्रह्लाद ने नृसिंहभगवान् से अपनी भक्ति और उनका प्रिय पात्र बनने का कारण पूछा

श्रीप्रह्लाद उवाच
नमस्ते भगवन् विष्णो नृसिंहवपुषे नमः।
त्वद्भक्तोऽहं सुरेशैकं त्वां पृच्छामि च तत्त्वतः।।
स्वामिंस्त्वयि ममोत्पन्ना भक्तिर्ब्बहुविधा कथम्।
कथं ते सुप्रियो जातः कारणं वद मे प्रभो।।

नृसिंह भगवान् ने प्रह्लाद को पूर्वजन्म में वेश्यागामी होने के बाद भी व्रत के प्रभाव से इस जन्म में भक्ति प्राप्त होना बताया

श्रीनृसिंह उवाच
कथयामि महाप्राज्ञ शृणुष्वैकाग्रमानसः।
भक्तेर्यत् कारणं वत्स ! प्रियत्वस्य च तत् पुनः।।
पुराकल्पे ह्यभूर्व्विप्रः किञ्चित्त्वं नाप्यधीतवान्।
नाम्ना च वसुदेवो हि वेश्यायां तत्परो ह्यभूः।।
तस्मिन् जन्मनि नैव त्वं चकर्थ सुकृतं कियत्।
मुक्त्वा तु मद्व्रतं चैकं वेश्यासङ्गतिलालसः।।
मद्व्रतस्य प्रभावेण भक्तिर्ज्जाता तवेदृशी।

साथ ही इस व्रत के प्रभाव से पुत्रहीन को भक्तिमान पुत्रसमूह, दीन-दरिद्र व्यक्ति को लक्ष्मी, राज्य के अभिलाषी को उत्तम राज्य, दीर्घायु की कामना वाले को शिव सदृश्य दीर्घायु प्राप्त होती है। यह व्रत स्त्रियों के लिए पुत्रदायक, सौभाग्यजनक, अवैधव्यकर, पुत्रशोकनाशन, धन-धान्यप्रद, पतिप्रियकर और शुभकर है। इस व्रत के अनुष्ठान से नारीवृन्द, सार्वभौम नन्द तथा स्वर्ग-सुख प्राप्त कर सकती है। इस व्रत का अनुष्ठान करने पर नर व नारी सभी को श्रीभगवान मुक्तिफल प्रदान करते हैं।

अपुत्त्रो लभते पुत्त्रान्मद्भक्तांश्च सुवर्च्चसः । दरिद्रो लभते लक्ष्मीं धनदस्य च यादृशी ।।
तेजस्कामो लभेत्तेजो राज्येप्सू राज्यमुत्तमम् । आयुस्कामो लभेत्त्वायुर्यादृशन्तु शिवस्य च ।।
स्त्रीणां व्रतमिदं साधु पुत्त्रदं भाग्यदं तथा । अवैधव्यकरं तासां पुत्त्रशोकविनाशनम् ।।
धनधान्यफलञ्चैव पतिप्रियकरं सुखम् । सार्व्वभौमसुखं तासां दिव्यसौख्यं भवेत्ततः ।।
स्त्रियो वा पुरुषा वापि कुर्व्वन्ति व्रतमुत्तमम् । तेभ्यो ददाम्यहं सौख्यं भुक्तिमुक्तिफलं तथा ।।

यही आख्यान पद्मपुराण उत्तरखण्ड में भी वर्णित है।

नारदपुराण पूर्वभाग अध्याय १२३ में बताया है प्रतिवर्ष विधिपूर्वक इस व्रत को करने वाला सम्पूर्ण भोगों को भोगकर अन्त में श्रीहरि के पद को प्राप्त करता है।
"एवं यः कुरुते विप्र विधिवद्व्रतमुत्तमम् । वर्षे वर्षे स लभते भुक्तभोगो हरेः पदम् ।।"

पद्मपुराण उत्तरखण्ड में इस व्रत को तीनों लोकों में दुर्लभ बताया है जिसके सुनने मात्र से ब्रह्महत्यादिक पापों से मनुष्य छूट जाता है ***"शृणु देवि प्रवक्ष्यामि व्रतं त्रैलोक्यदुर्लभम्। यं श्रुत्वा मुच्यते लोको ब्रह्महत्यादिपातकात्"***

व्रत कैसे करे

व्रत के दिन मध्याह्न में चार बार क्रमशः तिल, गोमय, मृत्तिका और आँवला मलकर पृथक् - पृथक् स्नान करे। इसके बाद शुद्ध स्नान करे। इससे पापसमूह की शान्ति होती है।
"मृत्तिका गोमयेनैव तथा धात्रीफलेन च। तिलैश्च विधिवत्स्नायात्सर्वपापौघ शांतये।।"

धर्मसिन्धु में मध्याह्न में तिल और आँवलों से स्नान का निर्देश है
"मध्याह्ने तिलामलकैः स्नात्वा"

पद्मपुराण उत्तरखण्ड में सङ्कल्प करने का निर्देश है
"ममाग्रे व्रतसंकल्पं मद्भक्तो विजितेंद्रियः। अद्याहं ते विधास्यामि व्रतं निर्विघ्नतां नय।।"

सङ्कल्प (वर्षकृत्यदीपक से सङ्कलित)

नवीन व्रत ग्रहण हेतु

> *ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः अद्येहेत्यादि अमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्माऽहं सकलपापक्षयपूर्वकश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये अद्यारभ्य शरीरावसानपर्यन्तं श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थं नृसिंहचतुर्दशीव्रतं करिष्ये।।*

इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो।
निर्विघ्नं सिद्धियामातु श्रीनृसिंह नमोऽस्तु ते।।
गृहीतेऽस्मिन्व्रते देव यद्यपूर्णे मृतो ह्यहम्।
तन्मे भवतु सम्पूर्णं त्वत्प्रसादाजनार्दन।।
पात्र से जल भूमि पर डालें

प्रतिवर्ष सङ्कल्प

> *ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः अमुकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये श्रीनृसिंहदेवप्रीतये श्रीनृसिंहजयन्तीव्रतं करिष्ये*

ॐ नृसिंह देवदेवेश तव जन्मदिने शुभे।
उपवासं करिष्यामि सर्वभोगविवर्जितः।। (यह दो पंक्ति गीताप्रेस व्रत परिचय में सङ्कल्प मन्त्र हैं)
उपोष्येऽहं नारसिंह भुक्तिमुक्तिफलप्रद।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि भक्ति मे नृहरे दिश।। (यह दो पंक्ति धर्मसिन्धु में सङ्कल्प मन्त्र हैं)
श्रीनृसिंह महोग्रस्त्वं दयां कृत्वा ममोपरि।
अद्याहं ते विधास्यामि व्रतं निर्विघ्नतां नय।।
पात्र से जल भूमि पर डालें

व्रतराज ने कहा है सङ्कल्प मध्याह्न में ही करें ***"अस्यां च सङ्कल्परूपव्रतोपक्रमो मध्याह्न एव कर्तव्यः"*** जिसका कारण नरसिंह पुराण का कथन कहा गया है जिसमें लिखा है मध्याह्न के समय नदी आदि में स्नान करें उसके बाद व्रत के कार्य करें ***"ततो मध्याह्नवेलायां नद्यादौ स्नानमाचरेत परिधाय ततो वासो व्रतकर्म समारभेत"***

धर्मसिन्धु में एक दिन पूर्व अर्थात त्रयोदशी को एकभुक्त भोजन का निर्देश है
"त्रयोदश्यां कृतैकभक्तश्चतुर्दश्यां"

नारदपुराण पूर्वभाग अध्याय 123 में श्रीनृसिंह व्रत की विधि में कहा गया है :
इस दिन उपवास (निराहार) करें और अगर शक्ति न हो तो एक समय भोजन करें
"उपवासविधानेन शक्तोऽशक्तस्तथैकभुक्"

सायंकाल में दैत्यसूदन भगवान् नृसिंह को पञ्चामृत आदि से स्नान कराकर षोडशोपचार से उनकी पूजा करें
"निशागमे तु संपूज्य नृसिंहं दैत्यसूदनम् । उपचारैः षोडशभिः स्नानैः पंचामृतादिभिः ।।"

इस मंत्र से भगवान् से क्षमा प्रार्थना करें
"तत्पहाटककेशांत ज्वलत्पावकलोचन । वज्राधिकनखस्पर्शदिव्यसिंह नमोऽस्तु ते ।।"
दिव्यसिंह! आपके अयाल तपाये हुए सोने के समान दमक रहे हैं, नेत्र प्रज्वलित अग्नि के सामान दहक रहे हैं और आपके नखों का स्पर्श वज्र से भी अधिक कठोर है, आपको नमस्कार है।

वर्षकृत्यदीपक में स्वर्ण प्रतिमा तथा शालग्रामशिला में नृसिंह रुपी विष्णु के षोडशोपचार पूजा का सङ्कल्प इस प्रकार मिलता है

> *ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः अद्येहेत्यादि अमुकसंवत्सरे उत्तरायणे बसंततौं वैशाखमासे शुक्लपक्षे श्रीनृसिंहचतुर्दश्यां तिथौ अमुकोऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलावाप्तये श्रीनृसिंहचतुर्दशीवृताङ्गत्वेन स्वर्णप्रतिमायां शालग्रामशिलायां वा श्रीनृसिंहरूपिणो विष्णोः षोडशोपचारैः पूजनं करिष्ये।*

पद्मपुराण उत्तरखण्ड में निर्देश दिया है स्नान करके सुन्दर वस्त्र पहनकर अष्टदल बनाकर उस पर रत्न संयुक्त ताम्बे का कलश स्थापित कर उसपर चावल से भरा हुआ पात्र रखें और उसके बाद लक्ष्मीसंयुक्त नृसिंह की स्वर्ण मूर्ती स्थापित करें। पञ्चामृत से अभिषेक करें।

परिधाय शुभे वस्त्रे नित्यकर्म समारभेत्। ततो गृहं विलिप्याथ कुर्यादष्टदलं शुभम्।।
कलशं तत्र संस्थाप्य ताम्रंत्रसमन्वितम्। तस्योपरि न्यसेत्पात्रं तंडुलैः परिपूरितम्।।
हैमीं च तत्र मन्मूर्तिं स्थाप्य लक्ष्म्या समन्विताम्। निर्माय शक्त्या स्वर्णेन स्नाप्य पंचामृतैस्ततः।।

फूलों का मण्डप बनाएं, षोडशोपचार पूजा करें, नृसिंह मन्त्रों और नियम से उनका पूजन करें उसके बाद पुराणों के मन्त्रों से विशेष पूजा करें। कपूर समेत चन्दन केसर से युक्त, पुष्प, तुलसीदल जो श्रीनृसिंह जी को देता है वह निःसंदेह मुक्त हो जाता है। कृष्ण अगरुमय धूप सदैव भगवान् को प्यारी है। महादीप से आरती करें, घण्टा बजाएं। शक्कर का नैवेद्य दें।

मंडपं कारयेत्तत्र पुष्पस्तबक शोभितम्। ऋतुकालोद्भवैः पुष्पैः पूज्योऽहं च यथाविधि।।
उपचारैः षोडशभिर्मंत्रैर्नियमैश्च यः। ततः पौराणिकैर्मंत्रैः पूजनीयो विशेषतः।।
चंदनं च सकर्पूरं घनकुंकुममिश्रितम्। कालोद्भवानि पुष्पाणि तथा तुलसीदलानि च।.
श्रीनृसिंहाय यो दद्यात्स मुक्तो नात्र संशयः। कृष्णागुरुमयं धूपं सर्वदा हरिवल्लभम्।।
हरये गुरवे दद्यात्सर्वकामार्थसिद्धये। महादीपः प्रकर्त्तव्यो ह्यज्ञानध्वांत नाशनः। महानीराजनं कुर्याद्घंटानाद पुरःसरम्।।
नैवेद्यं शर्करां चापि भक्ष्यभौज्यसमन्वितम्। ददामि ते रमाकांत सर्वपापक्षयं कुरु।।

चन्दनमन्त्रः
“चन्दनं शीतलं दिव्यं चन्द्रकुङ्कुममिश्रितम् । ददामि ते प्रतुष्ट्यर्थं नृसिंह परमेश्वरेति ।।”
पुष्पमन्त्रः
“कालोद्भवानि पुष्पाणि तुलस्यादीनि वै प्रभो ! ।पूजयामि नृसिंहेश ! लक्ष्म्या सह नमोऽस्तु ते ।।”
धूपमन्त्रः
“कालागुरुमयं धूपं सर्व्वदेवसुवल्लभम् । करोमि ते महाविष्णो ! सर्व्वकामसमृद्धये ।।”
दीपमन्त्रः
“दीपः पापहरः प्रोक्तस्तमसां राशिनाशनः । दीपेन लभते तेजस्तस्माद्दीपं ददामि ते ।।”
नैवेद्यमन्त्रः
“नैवेद्यं सौख्यदं चास्तु भक्ष्यभोज्यसमन्वितम् । ददामि ते रमाकान्त सर्व्वपापक्षयं कुरु ।।”
अर्घमन्त्रः
“नृसिंहाच्युत देवेश लक्ष्मीकान्त जगत्पते । अनेनार्घ्यप्रदानेन सफलाः स्युर्म्मनोरथाः ।।”

धर्मसिन्धु में अर्घ्यमंत्र इस प्रकार है
परित्राणाय साधूनां जातो विष्णुर्नृकेसरी । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सलक्ष्मीर्नृहरिः स्वयम् ।।
यही मंत्र स्मृति कौस्तुभ में वर्णित है

पद्मपुराण उत्तरखण्ड का नैवेद्य मंत्र
नृसिंहाच्युत देवेश तव जन्मदिने शुभे।
उपवासं करिष्यामि सर्वभोगविवर्जितः।।

प्रार्थना मन्त्र
मद्वंशे ये नरा जाता ये भविष्याश्च मानवाः। तानुद्धरस्व देवेश दुःखदाद्भवसागरात्।।
पातकार्णवमग्नस्य व्याधिभिश्चांबुचारिभिः। जीवैस्तु परिभूतस्य महादुःखगतस्य मे।।
करावलम्बनं देहि शेषशायी जगत्पते। व्रतेनानेन देवेश भुक्तिमुक्तिप्रदो भव।।

हे देवों के स्वामी ! हमारे वंश में जो उत्पन्न हैं और जो होने वाले मनुष्य हैं उनको दुःखरूपी संसार सागर से उद्धार कीजिये। पापरूपी समुद्र में डूबे, व्याधिरूप जलचारी जीवों से कष्टयुक्त और महादुःख में प्राप्त हुए हमको। हे शेष के ऊपर सोने वाले ! संसार के पति! हमको हाथ का अवलम्बन दीजिये और हे देवों के स्वामी! इस व्रत से भुक्ति और मुक्ति के देने वाले होएं।

गन्ध अक्षत पुष्प लेकर द्वादश नाम से पूजा करें:
ॐ केशवाय नमः
ॐ नारायणाय नमः
ॐ माधवाय नमः
ॐ गोविन्दाय नमः
ॐ विष्णवे नमः
ॐ मधुसूदनाय नमः
ॐ त्रिविक्रमाय नमः
ॐ वामनाय नमः
ॐ श्रीधराय नमः
ॐ हृषीकेशाय नमः
ॐ पद्मनाभाय नमः
ॐ दामोदराय नमः

रात्रि में गायन - वादन, पुराणश्रवण या हरि संकीर्तन से जागरण करे । दूसरे दिन स्नान के पश्च्यात फिर पूजन करे और ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वजनों सहित स्वयं भोजन करे। ब्राह्मण को धेनु सहित नृसिंह की स्वर्ण प्रतिमा दान दें।
इस प्रकार प्रतिवर्ष करते रहने से नृसिंहभगवान उसकी सब जगह रक्षा करते हैं और यथेच्छ धन - धान्य देते है ।

नारदपुराण ने इस व्रत के नियम के अंतर्गत व्रती पुरुष को मिट्टी की वेदी पर सोने, इन्द्रियों और क्रोध को काबू में रखने और सब प्रकार से भोगों से अलग रहने का निर्देश दिया है।

व्रत उद्यापन

व्रतोद्यापन चन्द्रिका में व्रत के उद्यापन के सन्दर्भ में कलशार्चन, गणपतिपूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृकापूजन, वसोर्द्धारामायुष्यमंत्रजप, नान्दीश्राद्ध, सर्वतोभद्रमण्डल ब्रह्मादिदेवता स्थापन, प्रधानदेवता स्थापन, पूजन के साथ "ह्रीं नृसिंहाय नमः" मूल मंत्र से यथाशक्ति पूजन करने का निर्देश दिया गया है।

इसके उपरान्त नृसिंहत्रिंशोपचारपूजा का निर्देश देते हुए उनके मन्त्रों का वर्णन किया है:

ध्यानम्
सुरकदम्बकैः प्रश्रयेण वै नियतसेवितं गोकुलोत्सवम् ।
किरीटकुण्डलं पीतजाम्बरं खलनिषूदनं चिन्तये विभुम् ।।

आवाहनम्
खगपवाहनं क्षीरजाप्रियं भवभयापहं भुक्तिमुक्तिदम् ।
सुरपतिं जगन्नाथमीश्वरं कमलभासमा वाहयाम्यहम् ।।

आसनम्
विधिमुखामरैर्नम्रमूर्तिभिः प्रणतसंश्रितं दुर्धरादिमत् ।
वरमणिप्रभा भासुरन्नवं जनप गृह्यतां स्वर्णमासनम् ।।

पाद्यम्
कुसुमवासितं गन्धविस्तृतं मुनिनिषेवितं सादरेण वै ।
ध्रुवपराशराभीष्टद ! प्रभो जनप गृह्यतां पाद्यमुत्तमम् ।।

अर्घ्यम्
कनकसम्पुटे स्थापितं वरं जलसुवर्णमुक्ताफलैर्युतम् ।
करसरोरुहाभ्यां घृतम्मया जनप गृह्यतामर्घ्यमुत्तमम् ।।

आचमनीयम्
तव रमायुजः सेवनाज्जना नृपतिसन्निभाः सम्भवन्ति हि ।
सुरतरङ्गिणी शुद्धवारिभिर्जनपगृह्यतामाचमं शुभम् ।।

पयःस्नानम्
सुरगवुद्भवं वीर्यवर्धकं निखिलदेहिनां जीवनप्रदम्
शशधरप्रभं फेनसंयुतम् जनपगृह्यतामर्पितं पयः ।।

दधि स्नानम्
शुचिपयः समुद्भूतमुतप्रदं व्रजनिवासिभिः स्वादितं शुभम् ।
रजतसंनिभं शीततामयं जनपगृह्यतामर्पितन्दधिम् ।।

घृतस्नानम्
हुतवहप्रियं क्षीरजोद्भवं सकलदेहिनां सत्त्ववर्धकम् ।
कुमुदसदृशं विष्णु दैवतं जनपगृह्यतामर्पितङ्घृतम् ।।

मधुस्नानम्
मधुलतोद्भवं स्वादुमञ्जुलं मधुपमक्षिकाद्यैर्विनिर्मितम् ।
मधुरतामयं गन्धसम्प्रदं मधुहतेऽर्पितं गृह्यताम्मधु ।।

शर्करा स्नानम्
मदनकार्मुकाद्या विनिर्मिता मधुरतान्विता सर्वपापहा ।
सरसताङ्गता तारकोपमा जनपगृह्यतां शुद्धशर्करा ।।

अभ्यंग
सुरभिकदंबकेतकी पुष्पसंभवं मृगमदान्वितं यंत्रनिर्मितम्।
अनुपकारिणा भक्तितो मया जनप गृह्यतां तैलमर्पितम्।।

स्नानम्
हरिपदाम्बुजा नर्मदामही सरयूचन्द्रभागाभ्य आहृतम् ।
जलजवासितं स्नानहेतवे जनपगृह्यतामर्पितञ्जलम् ।।

वस्त्रम् --
विविधतन्तुभिर्गुम्फितं नवं सुतपनीयभं सोत्तरीयकम् ।
मधुरिपो जगन्नाथ माधव जनपगृह्यतां वस्त्रमर्पितम् ।।

यज्ञोपवीतम्

त्रिगुणितं सितैरर्कतन्तुभिः कृतमिदम्मया शुद्धचेतसा ।
निगमसम्मतं बन्धमोचकः जनपगृह्यतामुपवीतकम् ।।

गन्धम्-चन्दनम्
मलयसम्भवं पीतवर्णकं मृगमदाधिभिर्वासितं वरम् ।
मुक्तिषट्पदं कुङ्कुमान्वितं जनपगृह्यतां गन्धमर्पितम् ।।

अक्षतान्
कमलसम्भवा मौक्तिकोपमा स्त्रिपथगोदकैः शालिताः शिवाः ।
अगरुकुङ्कुमैर्मिश्रितावरा जनपगृह्यतामर्पिताक्षताः ।।

पुष्पमाला
तरुणमल्लिका कुन्दमालती बकुलपङ्कजानां समुच्चयैः ।
सततसुत्रितं भक्तितो मया जनपगृह्यतां हारमर्पितम् ।।

श्वेत चूर्ण
कदम्बकेतकी वृक्षसम्भवं विविधसौख्यदं कान्तिवर्धनम् ।
सितकरोपमं स्नेहसत्कृतं जनपगृह्यतां श्वेतचूर्णकम् ।।

रक्तचूर्ण
अमरजादिभिर्देववृन्दकैः शिरसिवैधृतं प्रश्रयेण वा ।
तपनसदृशं दृष्टिमुत्कलं जनपगृह्यतां रक्तचूर्णकम् ।।

सिन्दूर चूर्ण
गणपतिप्रियं बालसूर्यभं पवनसूनुना स्वीकृतं सदा ।
सुरभिवासितं सूक्ष्मचूर्णकं जनपगृह्यतां नागसम्भवम् ।।

धूपम्
अगरगुग्गुला ज्यादिमिश्रितं तपनयोगजोद् भूतसौरभम् ।
अमरवृन्दकैः स्नेह सत्कृतं जनपगृह्यतां धूपमुत्तमम्। ।।

दीपम्
अनलतैलिनी गोघृतान्वितं तिमिरनाशकं दीप्ततन्तुभिः ।

कनकभाजने स्थापितम्मया जनपगृह्यतां दीपमुत्तमम् ।।

नैवेद्यम्

पनसदाडिमाम्रादिसत्फलं सुघृतमोदका पूपपायसम् ।
रजतभाजने स्थापितम्मया जनपगृह्यतां खाद्यमुत्तमम् ।।

आचमनी

जलधिगोद्भवं शीततामयं सकलप्राणिनां प्राणदायकम् ।
विधिसमर्पितं शुद्धचेतसा जनपगृह्यतामाचममं शुभम् ।।

ताम्बूलं

खपुरसम्भवं पूगचूर्णयुग् मृगमदेलुका वासितं वरम् ।
फणिलतादलैः क्लृप्तबीडकं जनपगृह्यतामास्यभूषणम् ।।

दक्षिणा

निखिलयाचिनां श्रेष्ठभोगदा निगमसम्मता कर्मपूर्णदा ।।
सकलभूजनैर्वाञ्छिता सदा जनपगृह्यतां हेमदक्षिणा ।।

नीराजनम्

हुतवहप्रियैर्मिश्रितं वरं जलधिजैर्युतं सर्वपापहम् ।
मुखविलोकनार्थाय संस्कृतं जनपगृह्यतामार्तिकं शुभम् ।।

प्रदक्षिणाम्

वरदसञ्चितं पूर्वजन्मभिर्दहति किल्बिषं त्वत्प्रदक्षिणा ।
नरहरिमुदा शुद्धचेतसा सततमीश्वरं त्वां नमाम्यहम् ।।

नमस्कार

जय जय प्रभो सात्वतांपते शरणवत्सलाभीष्टसाधक ।
यदुपते जगन्नाथ सर्वदा शरणमागतं पाहि पाहि माम्।।

इसके उपरान्त होम करके ब्राह्मण की पूजा, भोजन, दान, दक्षिणा करें। इस प्रकार नृसिंहचतुर्दशी व्रत की विधि पूर्ण होती है।

माता नृसिंहः पिता नृसिंहः ।
भ्राता नृसिंहः सखा नृसिंहः ।।
विद्या नृसिंहः द्रविणं नृसिंहः ।
स्वामी नृसिंहः सकलं नृसिंहः ।।
इतो नृसिंहः परतो नृसिंहः ।
यतो नृसिंहस्ततो नृसिंहः ।।
नृसिंहदेवात्परो न कश्चित् ।
तस्मान्नृसिंहं शरणं प्रपद्ये ।।

श्रीनृसिंहद्वादशनामस्तोत्रम्

प्रणम्य शिरसा देवं नृसिंहं भक्तवत्सलम् ।
सच्चिदानंदरूपोऽयं परिपूर्ण जगद्गुरुम् ॥

अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंहद्वादशनामस्तोत्रमंत्रस्य पुरंदर ऋषिः ।
श्रीलक्ष्मीनृसिंहो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । क्ष्रौम्बीजम् ।
ॐ श्री शक्तिः । ॐ श्रीलक्ष्मीनृसिंहप्रीत्यर्थेजपे विनियोगः ॥

अथ न्यासः
ॐ क्ष्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ क्ष्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ क्ष्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ क्ष्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ क्ष्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ क्ष्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

ॐ क्ष्रां हृदयाय नमः ।
ॐ क्ष्रीं शिरसे स्वाहा ।
ॐ क्ष्रूं शिखायै वषट् ।
ॐ क्ष्रैं कवचाय हुं ।
ॐ क्ष्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ क्ष्रः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्
लक्ष्मीशोभितवामभागममलं सिंहासने सुंदरं
सव्ये चक्रधरं च निर्भयकरं वामेन चापं वरम् ।
सर्वाधीशकृतान्तपत्रममलं श्रीवत्सवक्षःस्थलं
वन्दे देवमुनीन्द्रवन्दितपदं लक्ष्मीनृसिंहं विभुम् ॥

प्रथमं तु महाज्वालो द्वितीयं तूग्रकेसरी ।
तृतीयं वज्रदंष्ट्रश्च चतुर्थं तु विशारदः ॥१॥

पञ्चमं नारसिंहश्च षष्ठः कश्यपमर्दनः ।
सप्तमो यातुहन्ता च अष्टमो देववल्लभः ॥२॥

नव प्रह्लादवरदो दशमोऽनन्तहस्तकः ।
एकादशो महारुद्रो द्वादशो दारुणस्तथा ॥३॥

द्वादशैतानि नामानि नृसिंहस्य महात्मनः ।
मन्त्रराजेति विख्यातं सर्वपापविनाशनम् ॥४॥

क्षयापस्मारकुष्ठादितापज्वरनिवारणम् ।
राजद्वारे महाघोरे सङ्ग्रामे च जलान्तरे ॥५॥

गिरिगह्वार आरण्ये व्याघ्रचोरामयादिषु ।
रणे च मरणे चैव शमदं परमं शुभम् ॥६॥

शतमावर्तयेद्यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ।
आवर्तयेत्सहस्रं तु लभते वाञ्छितं फलम् ॥७॥

इति श्रीब्रह्मपुराणे ब्रह्मनारदसंवादे
श्रीलक्ष्मीनृसिंहद्वादशनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीलक्ष्मीनृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

अस्य श्रीलक्ष्मीनृसिंहाष्टोत्तरशतदिव्यनामस्तोत्रमन्त्रस्य
श्रीनारायण ऋषिः । श्रीनृसिंहो देवता । अनुष्टुप् छन्दः ।
श्रीनृसिंहप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ॐ श्रीनृसिंहः पुष्कराक्षः करालविकृताननः ।
हिरण्यकशिपोर्वक्षोविदारणनखाङ्कुशः ॥१॥

प्रह्लादवरदः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ।
अभक्तजनसंहारी भक्तानामभयप्रदः ॥२॥

ज्वालामुखस्तीक्ष्णकेशस्तीक्ष्णदंष्ट्रो भयङ्करः ॥
उत्तप्तहेमसङ्काशसटाधूतबलाहकः ॥३॥

त्रिनेत्रकपिलः प्रांशु सोमसूर्याग्निलोचनः ।
स्थूलग्रीवः प्रसन्नात्मा जाम्बूनदपरिधृतः ॥४॥

व्योमकेशः प्रभृतिभिस्त्रिदिवेशैरभिष्टुतः ।
उपसंहृतसप्तार्चिः कवलीकृतमारुतः ॥५॥

दिग्गजावलिदर्पघ्नः कद्रूजविषनाशनः ।
अभिचारक्रियाहन्ता ब्रह्मण्यो भक्तवत्सलः ॥६॥

समुद्रसलिलत्राता हलाहलविशीर्णकृत् ।
ओजः प्रपूरिताशेषचलाचलजगत्त्रयः ॥७॥

हृषीकेशो जगत्त्राणः सर्वगः सर्वकामदः ।
नास्तिकप्रत्ययार्थाय दर्शितात्मा प्रभाववान् ॥८॥

हिरण्यकशिपोरग्रे सभास्तम्भसमुद्भवः ।
उग्रोग्निज्वालमाली च सुतीक्ष्णो भीमदर्शनः ॥९॥

दग्धाखिलजगज्जंन्तुकारणं जगतामपि ।
आधारः सर्वभूतानां ईश्वरः सर्वहाटकः ॥१०॥

विष्णुर्जिष्णुर्जगत्धामबहिरन्तः प्रकाशकः ।
योगिहृत्पद्ममध्यस्थो योगो योगविदुत्तमः ॥११॥

स्त्रष्टा हर्ता जगत्त्राता व्योमरूपी जनार्दनः ।
चिन्मयः प्रकृतिः साक्षी गुणातीतो गुणाश्रयः ॥१२॥

मखविच्छेदकृत्कर्ता सर्वपाशविदारकः ।
व्यक्ताव्यक्तःस्वरूपो यः सूक्ष्मसदसदात्मकः ॥१३॥

अव्ययः शाश्वतोऽनन्तो वीरजित्परमेश्वरः ।
मायावी मरूदाधारो निमिषोऽक्षर एव च ॥१४॥

अनादिनिधनो नित्यःपरब्रह्माभिधायकः ।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्ग प्रकाशितचतुर्भुजः ॥१५॥

पीताम्बरधरः स्त्रग्वी कौस्तुभाभरणोज्वलः ।
श्रियाद्ध्यासितवामाङ्गश्रीवत्सेन विराजितः ॥१६॥

प्रसन्नवदनः शान्तो लक्ष्मीप्रियपरिग्रहः ।
वासुदेवो महादेवो वाक्यपुष्पप्रपूजितः ॥१७॥

उद्युक्ताहवहुङ्कारभीषिताखिलदिङ्मुखः ।

गर्जन्वीरासनासीनः कठोरकुटिलेक्षणः ॥१८॥

दैतेयक्षतवक्षोऽसृगार्द्रीकृतनखायुधः ।
अशेषप्राणिभयदः प्रचण्डो दण्डताण्डवः ॥१९॥

निटिलसृतघर्माम्बुसम्भूतज्वलिताननः ।
वज्रसिंहो महमूर्तिर्भीमो भीमपराक्रमः ॥२०॥

स्वभक्तार्पितकारुण्यो बहूक्तो बहुरूपधृक् ।
एवं अष्टोत्तरशतं नाम्ना नरसिंहरूपिणः ॥२१॥

नरकेसरिणा दत्तं स्वप्ने शेषाय धीमते ।
आयुरारोग्यसम्पत्तिः पुत्रपौत्रप्रवर्धन ॥२२॥

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे श्रीनृसिंहाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीनृसिंहमालामन्त्रः

श्री गणेशाय नमः

विनियोग

अस्य श्री नृसिंहमालामन्त्रस्य नारदभगवान् ऋषिः । अनुष्टुभ् छन्दः । श्री नृसिंहोदेवता । आं बीजम् । लं शक्तिः । मेरुकीलकम् । श्रीनृसिंहप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥

ॐ नमो नृसिंहाय ज्वलामुखग्निनेत्रय शङ्खचक्रगदाप्रहस्ताय ।
योगरूपाय हिरण्यकशिपुच्छेदनान्त्रमालाविभुषणाय हन हन दह
दह वच वच रक्ष वो नृसिंहाय पुर्वदिषां बन्ध बन्ध
रौद्रभसिंहाय दक्षिणदिशां बन्ध बन्ध पावननृसिंहाय
पश्चिमदिशां बन्ध बन्ध दारुणनृसिंहाय उत्तरदिशां बन्ध
बन्ध ज्वालानृसिंहाय आकाशदिशां बन्ध बन्ध लक्ष्मीनृसिंहाय
पातालदिशां बन्ध बन्ध कः कः कम्पय कम्पय आवेशय आवेशय
अवतारय अवतारय शीघ्रं शीघ्रं ।

ॐ नमो नारसिंहाय नवकोटिदेवग्रहोच्चाटनाय ।

ॐ नमो नारसिंहाय अष्टकोटिगन्धर्व ग्रहोच्चाटनाय ।
ॐ नमो नारसिंहाय षट्कोटिशाकिनीग्रहोच्चाटनाय ।
ॐ नमो नारसिंहाय पञ्चकोटि पन्नगग्रहोच्चाटनाय ।
ॐ नमो नारसिंहाय चतुष्कोटि ब्रह्मराक्षसग्रहोच्चाटनाय ।
ॐ नमो नारसिंहाय द्विकोटिदनुजग्रहोच्चाटनाय ।
ॐ नमो नारसिंहाय कोटिग्रहोच्चाटनाय ।
ॐ नमो नारसिंहाय अरिमूरीचोरराक्षसजितिः वारं वारं ॥

श्रीभय चोरभय व्याधिभय सकलभयकण्टकान् विध्वंसय विध्वंसय ।
शरणागत वज्रपञ्जराय विश्वहृदयाय प्रह्लादवरदाय
क्षरौं श्रीं नृसिंहाय स्वाहा ।
ॐ नमो नारसिंहाय मुद्गलशङ्खचक्रगदापद्महस्ताय
नीलप्रभाङ्गवर्णाय भीमाय भीषणाय ज्वालाकरालभयभाषित
श्रीनृसिंहहिरण्यकश्यपवक्षस्थलविदार्णाय ।
जय जय एहि एहि भगवन् भवन गरुडध्वज गरुडध्वज
मम सर्वोपद्रवं वज्रदेहेन चूर्णय चूर्णय
आपत्समुद्रं शोषय शोषय ।
असुरगन्धर्वयक्षब्रह्मराक्षस भूतप्रेत
पिशाचदिन विध्वन्सय् विध्वन्सय् ।
पूर्वाखिलं मूलय मूलय ।

प्रतिच्छां स्तम्भय परमन्त्रपयन्त्र परतन्त्र परकष्टं
छिन्धि छिन्धि भिन्धि हं फट् स्वाहा ।

इति श्रीअथर्वण वेदोवत्तनृसिंहमालामन्त्रः समाप्तः ।

श्री नृसिंहार्पणमस्तु ॥

श्रीनृसिंहकवचम् (त्रैलोक्यविजयम्)

नारद उवाच ।
इन्द्रादिदेववृन्देश ईड्येश्वर जगत्पते ।
महाविष्णोर्नृसिंहस्य कवचं ब्रूहि मे प्रभो ।
यस्य प्रपठनाद् विद्वांस्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥१॥

ब्रह्मोवाच ।
शृणु नारद वक्ष्यामि पुत्रश्रेष्ठ तपोधन ।
कवचं नरसिंहस्य त्रैलोक्यविजयी भवेत् ॥२॥

स्रष्टाऽहं जगतां वत्स पठनाद् धारणाद् यतः ।
लक्ष्मीर्जगत् त्रयं पाति संहर्ता च महेश्वरः ॥३॥

पठनाद् धारणाद् देवाः बहवश्च दिगीश्वराः ।
ब्रह्ममन्त्रमयं वक्ष्ये भ्रान्त्यादिविनिवारकम् ॥४॥

यस्य प्रसादाद् दुर्वासास्त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
पठनाद् धारणाद् योऽस्य शास्ता च क्रोधभैरवः ॥५॥

त्रैलोक्यविजयस्यापि कवचस्य प्रजापतिः ।
ऋषिः छन्दस्तु गायत्री नृसिंहो देवता विभुः ॥६॥

चतुर्वर्गे च शान्तौ च विनियोगः प्रकीर्तितः ।
क्ष्रौं बीजं मे शिरः पातु चन्द्रवर्णो महामनुः ॥७॥

ओं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम् ।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम् ॥८॥

द्वात्रिंशदक्षरो मन्त्रो मन्त्रराजः सुरद्रुमः ।
कण्ठं पातु ध्रुवं क्ष्रौं हृद्भगवते चक्षुषी मम ॥९॥

नरसिंहाय च ज्वालामालिने पातु कर्णकम् ।
दीप्तदंष्ट्राय च तथा अग्निनेत्राय नासिकाम् ॥१०॥

सर्वरक्षोघ्नाय तथा सर्वभूतहिताय च ।
सर्वज्वरविनाशाय दह दह पदद्वयम् ॥११॥

रक्ष रक्ष वर्ममन्त्रः स्वाहा पातु मुखं मम ।

तारादिरामचन्द्राय नमः पातु हृदं मम ॥१२॥

क्लीं पायात् पार्श्वयुग्मं च तारो नमः पदं ततः ।
नारायणाय नाभिं च आं ह्रीं क्रों क्ष्रौं च हुं फट् ॥१३॥

षडक्षरः कटिं पातु ओं नमो भगवते पदम् ।
वासुदेवाय च पृष्ठं क्लीं कृष्णाय उरुद्वयम् ॥१४॥

क्लीं कृष्णाय सदा पातु जानुनी च मनूत्तमः ।
क्लीं ग्लौं क्लीं श्यामलाङ्गाय नमः पायात् पदद्वयम् ॥१५॥

क्ष्रौं नृसिंहाय क्ष्रौं ह्रीं च सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ।
इति ते कथितं वत्स सर्वमन्त्रौघविग्रहम् ॥१६॥

तव स्नेहान्मया ख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ।
गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात् कवचं ततः ॥१७॥

सर्वपुण्ययुतो भूत्वा सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः ॥१८॥

हवनादीन् दशांशेन कृत्वा सत्साधकोत्तमः ।
ततस्तु सिद्धकवचो रूपेण मदनोपमः ॥१९॥

स्पर्धामुद्धूय भवने लक्ष्मीर्वाणी वसेन्मुखे ।
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्त्वा मूलेनैव पठेत् सकृत् ॥२०॥

अपि वर्षसहस्त्राणां पूजानां फलमाप्नुयात् ।
भूर्जे विलिख्य गुटिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ॥२१॥

कण्ठे वा दक्षिणे बाहौ नरसिंहो भवेत् स्वयम् ।
योषिद् वामभुजे चैव पुरुषो दक्षिणे करे ॥२२॥

बिभृयात् कवचं पुण्यं सर्वसिद्धियुतो भवेत् ।
काकवन्ध्या च या नारी मृतवत्सा च या भवेत् ॥२३॥

जन्मवन्ध्या नष्टपुत्रा बहुपुत्रवती भवेत् ।
कवचस्य प्रसादेन जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥२४॥

त्रैलोक्यं क्षोभयत्येवं त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
भूतप्रेतपिशाचाश्च राक्षसा दानवाश्च ये ॥२५॥

तं दृष्ट्वा प्रपलायन्ते देशाद्देशान्तरं ध्रुवम् ।
यस्मिन् गृहे च कवचं ग्रामे वा यदि तिष्ठति ।
तद्देशं तु परित्यज्य प्रयान्ति ह्यातिदूरतः ॥२६॥

इति त्रैलोक्यविजयं नाम श्री नृसिंह कवचम् ।

श्री शनैश्चरकृत नृसिंहाष्टकम्

श्री गणेशाय नमः । श्री शनैश्चराय नमः ॥

श्रीलक्ष्मीनृसिंहाय नमः ।

श्रीशनैश्चरकृत नृसिंहाष्टक प्रारम्भः

ॐ यत्पादपङ्कजरजः परमादरेण
संसेवितं सकलकल्मषराशिनाशम् ।
कल्याणकारणमशेषनिजानुगानां
सत्त्वं नृसिंह मयि देहि कृपावलोकम् ॥ १॥

सर्वत्र चञ्चलतया स्थितयापि लक्ष्म्या
ब्रह्मादिवन्द्यपदया स्थिरयान्यसेवी ।
पादारविन्दयुगुलं परमादरेण
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ २॥

यद्‌द्ररूपमागमशिरः प्रतिपाद्यमाद्य-
माध्यात्मिकादि परितापहरं विचिन्त्यम् ।
योगीश्वरैरपगताखिलदोषसङ्घैः
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ ३॥

प्रह्लादभक्तवचसा हरिराविरासीत्
स्तम्भेहिरण्यकशिपुंय उदारभावः ।
ऊर्वोनिधाय तदुदरो नखरैर्ददार
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ ४॥

योनैजभक्त मनलाम्बुधिभूधरोग्र
श्रूङ्गप्रपात विषदन्तसरीसृपेभ्यः ।
सर्वात्मकः परमकारुणिकोरक्ष
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ ५॥

यन्निर्विकार पररूपविचिन्तनेन
योगीश्वरा विषयावीत समस्तरागाः ।
विश्रान्तिमापुर विनाशक्ती पराख्यां
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ ६॥

यद्रूपमुग्रमरिमर्दनभावशाली
सञ्चिन्तनेन सकलाभवभीतिहारी ।
भूतज्वरग्रहसमुद्भवभीतिनाशम्
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ ७॥

यस्योत्तमं यश उमापतिमग्रजन्म
शक्रादिदैवतसभासुसमस्तगीतम् ।
श्रूत्वैक सर्व शमलप्रशमेकदक्षं
सत्त्वं नृसिंह मयि देहिकृपावलोकम् ॥ ८॥

श्रीकृष्ण उवाच
एवं श्रुत्वा स्तुतिन्देवः शनिना कल्पिता हरिः ।
उवाच्यथं ब्रह्मवृन्दस्य शनि सद्भक्तवत्सलः ॥

श्रीनृसिंह उवाच
प्रसन्नोहं शने तुभ्यं वरं वरय शोभनम् ॥

शनिरुवाच
नृसिंह त्वं मयि कृपां कुरु देवदयानिधे ।
मद्वासरस्तवप्रीतिकरस्याद्देवतापते ॥

मत्कृतं त्वत्स्तवं येवै श्रुण्वति च पठति च ।
सर्वान् कामान् पूरयेथां तेषां त्वं लोकभावना ॥

श्रीनृसिंह उवाच
तथैवास्तु शनेऽहं वै रक्षोभुवनमास्थितः ।
भक्तकामान् पूरयिष्ये त्व ममैक वचश्रुणु ॥

त्वत्कृतं मत्परं स्तोत्रं यः पठेत्त श्रुणोतियः ॥

द्वादशाष्टमजन्मस्थं त्वद्भयं नास्ति तस्यवै ॥

इति श्री शनैश्चरकृत नृसिंहाष्टकं सम्पूर्णम् ।

श्रीमद्भागवतपुराण से संकलित नृसिंह स्तुति

हिरण्यकशिपु का वध करने के पश्च्यात भगवान नृसिंह हिरण्यकशिपु की राजसभा में ऊँचें सिंहासन पर जाकर विराज गये। उस समय उनके अत्यन्त तेजपूर्ण और क्रोध भरे भयंकर चेहरे को देखकर किसी का भी साहस न हुआ कि उनके पास जाकर उनकी सेवा करे। उसी समय ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र, ऋषि, पितर, सिद्ध, विद्याधर, महानाग, मनु, प्रजापति, गन्धर्व, अप्सराएँ, चारण, यक्ष, किम्पुरुष, वेताल, सिद्ध, किन्नर और सुनन्द-कुमुद आदि भगवान् के सभी पार्षद उनके पास आये। उन लोगों ने सिर पर अंजलि बाँधकर सिंहासन पर विराजमान अत्यन्त तेजस्वी नृसिंह भगवान् की थोड़ी देर से अलग-अलग स्तुति की।

ब्रह्मोवाच -

नतोऽस्म्यनन्ताय दुरन्तशक्तये
विचित्रवीर्याय पवित्रकर्मणे ।
विश्वस्य सर्गस्थितिसंयमान् गुणैः
स्वलीलया सन्दधतेऽव्ययात्मने ।।

रुद्र उवाच -

कोपकालो युगान्तस्ते हतोऽयमसुरोऽल्पकः ।
तत्सुतं पाह्युपसृतं भक्तं ते भक्तवत्सल ।।

इन्द्र उवाच -

प्रत्यानीताः परम भवता त्रायता नः स्वभागा
दैत्याक्रान्तं हृदयकमलं तद्गृहं प्रत्यबोधि ।
कालग्रस्तं कियदिदमहो नाथ शुश्रूषतां ते

मुक्तिस्तेषां न हि बहुमता नारसिंहापरैः किम् ।।

ऋषय ऊचुः -
त्वं नस्तपः परममात्थ यदात्मतेजो
येनेदमादिपुरुषात्मगतं ससर्ज ।
तद्विप्रलुप्तममुनाद्य शरण्यपाल
रक्षागृहीतवपुषा पुनरन्वमंस्थाः ।।

पितर ऊचुः -
श्राद्धानि नोऽधिबुभुजे प्रसभं तनूजैः
दत्तानि तीर्थसमयेऽप्यपिबत् तिलाम्बु ।
तस्योदरान्नखविदीर्णवपाद् य आर्च्छत् ।
तस्मै नमो नृहरयेऽखिलधर्मगोप्त्रे ।।

सिद्धा ऊचुः -
यो नो गतिं योगसिद्धामसाधुः
अहारषीद् योगतपोबलेन ।
नाना दर्पं तं नखैर्निददार
तस्मै तुभ्यं प्रणताः स्मो नृसिंह ।।

विद्याधरा ऊचुः -
विद्यां पृथग्धारणयानुराद्धां
न्यषेधदज्ञो बलवीर्यदृप्तः ।
स येन सङ्ख्ये पशुवद्धतस्तं
मायानृसिंहं प्रणताः स्म नित्यम् ।।

नागा ऊचुः -
येन पापेन रत्नानि स्त्रीरत्नानि हृतानि नः ।
तद्वक्षःपाटनेनासां दत्तानन्द नमोऽस्तु ते ।।

मनव ऊचुः -
मनवो वयं तव निदेशकारिणो
दितिजेन देव परिभूतसेतवः ।
भवता खलः स उपसंहृतः प्रभो
करवाम ते किं अनुशाधि किङ्करान् ।।

प्रजापतय ऊचुः -
प्रजेशा वयं ते परेशाभिसृष्टा
न येन प्रजा वै सृजामो निषिद्धाः ।
स एष त्वया भिन्नवक्षा नु शेते

जगन्मङ्गलं सत्त्वमूर्तेऽवतारः ।।

गन्धर्वा ऊचुः -
वयं विभो ते नटनाट्यगायका
येनात्मसाद् वीर्यबलौजसा कृताः ।
स एष नीतो भवता दशामिमां
किमुत्पथस्थः कुशलाय कल्पते ।।

चारणा ऊचुः -
हरे तवाङ्घ्रिपङ्कजं भवापवर्गमाश्रिताः ।
यदेष साधुहृच्छयः त्वयासुरः समापितः ।।

यक्षा ऊचुः
वयमनुचरमुख्याः कर्मभिस्ते मनोज्ञैः
ते इह दितिसुतेन प्रापिता वाहकत्वम् ।
स तु जनपरितापं तत्कृतं जानता ते
नरहर उपनीतः पञ्चतां पञ्चविंश ।।

किम्पुरुषा ऊचुः -
वयं किम्पुरुषास्त्वं तु महापुरुष ईश्वरः ।

अयं कुपुरुषो नष्टो धिक्कृतः साधुभिर्यदा ।।

वैतालिका ऊचुः -
सभासु सत्रेषु तवामलं यशो
गीत्वा सपर्यां महतीं लभामहे ।
यस्तां व्यनैषीद् भृशमेष दुर्जनो
द्विष्ट्या हतस्ते भगवन्यथामयः ।।

किन्नरा ऊचुः -
वयमीश किन्नरगणास्तवानुगा
दितिजेन विष्टिममुनानुकारिताः ।
भवता हरे स वृजिनोऽवसादितो
नरसिंह नाथ विभवाय नो भव ।।

विष्णुपार्षदा ऊचुः -
अद्यैतद् हरिनररूपमद्भुतं ते
दृष्टं नः शरणद सर्वलोकशर्म ।
सोऽयं ते विधिकर ईश विप्रशप्तः
तस्येदं निधनमनुग्रहाय विद्मः ।।